॥ श्रीः ॥

ग्रहगोचर

ज्यौतिष ।

(गोचर फलादेश, फलदान समय शुभाशुभ, ग्रह चार, ग्रहदान, प्रश्नभाव और लग्न वाराही इत्यादि)

ज्यौतिष विद्या रसिकों के हितार्थ

भार्गव पुस्तकालय, काशी
ने प्रकाशित किया ।

* श्रीः *

ग्रहगोचरज्यौतिषम्

भाषाटीकासहितम् ।

(गोचर फलादेश, फलदानसमय, भुक्त संख्या, पाद विचार, ग्रहदान, प्रश्नभाव और लग्न वाराही इत्यादि इत्यादि)

प्रकाशक-

भार्गव पुस्तकालय काशी

॥ श्रीगणाधिपतये नमः ॥

अथ ग्रहगोचरज्योतिषम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

अथ सूर्यफलम् ।

सहज ३ दशम १० षष्ठे ६ लाभगे ११ याति सूर्य धनयशनृपमान्यं सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ शुभमतिमखिलार्थं बन्धुवर्गेऽपि सौख्यं सुतसुखधनलाभौ पुण्यवृद्धिं करोति ॥ १ ॥

जब सूर्य तीसरे, दसवें, छठे या ग्यारहवें स्थान में होते हैं, तब धन एवं यश का लाभ, राजा से सन्मान, सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धि, सुबुद्धि तथा विविध प्रकार के धन का लाभ, अपने बन्धु लोगों में सुख, पुत्र का सुख और धन का लाभ एवं पुण्य की वृद्धि करते हैं ।

जन्मान्त्य १,१२ सप्ताश्विव ७,२
चतुर्थ ४ संस्थः । पञ्चाष्टके ५, ८ वै
नवमे९ ऽपि भानुः॥ रोगं च शोकं
भयमग्निपीड़ां व्याधिप्रवासौ कुरु-
तेऽर्थहानिम् ॥ २ ॥

और यदि जन्म के या बारहवें, सातवें या दूसरे अथवा चौथे, पांचवें या आठवें एवं नववें स्थान में सूर्य हो तो रोग और शोक, भय तथा अग्निपीड़ा और मानसिक सन्ताप और प्रवास एवं धन की हानि होती है ॥ २ ॥

अथ चन्द्रफलम्।

जन्म १ त्रि ३ सप्ताश्विव ७,२
दशाय १०, ११ संस्थः षष्ठो ६ वि-
धुश्चापि करोति लाभम् ॥ द्रव्या-
गमं मित्रसमागमं च सद्बुद्धिवृद्धिं
द्विजदेवभक्तिम् ॥ ३ ॥

जन्म या तीसरे, सातवें वा दूसरे, दसवें, ग्यारहवें, तथा छठे स्थान में प्राप्त हुआ चन्द्रमा लाभ करता है, द्रव्य की प्राप्ति, मित्रों से समागम और श्रेष्ठ सात्विक बुद्धि की वृद्धि, ब्राह्मण और देवताओं की भक्ति कराता है ॥ ३ ॥

धर्माब्धि ९, ४ गश्च सुत ५-
रन्ध्र ८ गताव्ययस्थो १२ द्रव्यार्थ-
हानिमखिलं कुरुतेऽपि चन्द्रः ॥
चौराग्निभीतिवधबन्धयुतं करोति
हानिर्वियोगभयदुःखयुतं करोति ॥४॥

तथा नववें वा चौथे, पांचवें, आठवें, या बारहवें स्थान में प्राप्त हुआ चन्द्रमा समस्त द्रव्य और कार्य की हानि कर देता है, एवं चोर और अग्नि का भय तथा वध और बन्धन करता तथा हानि और वियोग का भय एवं दुःख की प्राप्ति करता है ॥ ४ ॥

अथ मङ्गलफलम् ।

त्रि ३ षष्ठ ६ लाभे ११ धरणी-

सुतः स्याद् गोभूहिरण्याम्बरलाभकारी । शत्रूक्षयं राजकृपां विधत्ते चारोग्यसौख्यं विविधं करोति ॥ ५ ॥

यदि मङ्गल तीसरे, छठें, और ग्यारहवें स्थान में हो तो गौ, भूमि, सुवर्ण एवं उत्तमोत्तम वस्त्रों का लाभ होता है, शत्रुओं का क्षय और राजकृपा एवं विविध प्रकार के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुख करता है ॥ ५ ॥

जन्म १ चतुर्थ ४ पञ्चम ५ द्वादश-१२ सप्ताष्टम ७, ८ नवम ९ द्वितीय-२ दशमेऽपि १० ॥ व्याधिं विदेशगमनं मित्रविरोधं कुजः कुरुते ॥ ६ ॥

और जो मङ्गल जन्म या चौथे, पांचवें या बारहवें तथा सातवें, आठवें, नौवें, दूसरे या दसवें स्थान में होय तो मानसिक व्यथा की वृद्धि, परदेश में गमन, मित्रों से विरोध करता है ॥ ६ ॥

अथ बुधफलम् ।

लाभे ११ द्वि २ षष्ठे ६ दशमे १० चतुर्थ४रन्ध्रे ८ बुधश्चापि करोति लाभम् ॥ सौभाग्यसौख्यं मनसोऽपि हर्षं चार्थागमं द्रव्यविवर्धनं च ॥७॥

बुध यदि ग्यारहवें, दूसरे, छठें या दसवें, चौथे या आठवें स्थान में स्थित हुआ हो तो लाभ होता है। सौभाग्य (भाग्य) का सुख, मन की आनन्द, इष्ट का प्राप्ति एवं धन को वृद्धि होती है ॥ ७ ॥

जन्म १ द्वादश १२ पञ्चमे ५ ऽपि नवमे ९ द्यूने ७ तृतीयेऽपि वा, सौख्यस्यापि विनाशनं प्रकुरुते द्रव्यार्थहानिं बुधः ॥ भ्रातुश्चापि विरोधशोककुभयं चाङ्गेऽपि कष्टं महन्नाना-

शत्रुभयं सदैवमसुखं व्याधिं वियोगं तथा ॥ ८ ॥

बुध जन्म के बारहवें, पांचवें, या नौवें, सातवें अथवा तीसरे स्थान में प्राप्त होकर सुख का नाश धन और कार्य की हानि करता है तथा भ्राताओं से विरोध, शोक और भय एवं अङ्गों में महान् कष्ट, विविध शत्रुओं से भय और सदा दुःख, व्याधि और वियोग को प्राप्ति करता है ॥ ८ ॥

अथ बृहस्पतिफलम् ।

द्वि. २ धर्मे ९ च लाभे ११ सुते ५ सप्तमे ७ स्याद् गुरुर्लाभकारी क्रये विक्रयेऽपि प्रतिष्ठाविवृद्धिं तथा बुद्धिवृद्धिं करोत्यर्थलाभं सुखं सम्पदश्च ॥ ९ ॥

बृहस्पति यदि दूसरे, नवें, ग्यारहवें या पांचवें तथा सातवें घर में होय तो क्रय विक्रय

(खरीदफरोक्त) में लाभ तथा प्रतिष्ठा की विशेष वृद्धि और बुद्धि, धन का लाभ, सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति करते हैं ॥ ९ ॥

द्वादश १२ दशम १० चतुर्थे ४ जन्मनि १ षष्ठाष्टमे ६,८ तृतीये ३ च ॥ व्याधि विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते ॥ १० ॥

बारहवें, दसवें, चौथे, जन्म के या छठें, आठवें अथवा तीसरे इन उक्त स्थानों में बृहस्पति होय तो व्याधि, परदेश का गमन और मित्रों में विरोध होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रफलम् ।

द्वि २ धर्म९ लाभाष्टमगे ११,८ सुते ५ स्याद्व्ययाख्य १२ वह्नि३ प्रथमे १ऽपि शुक्रः ॥ चतुर्थ ४ गश्चापि समागमं च सत्पुत्रवर्गादिसुखं करोति ॥ ११ ॥

शुक्र यदि दूसरे, नववें, ग्यारहवें या आठवें, पांचवें, बारहवें, तीसरे और जन्म के अथवा चौथे हों तो भी सबसे मिलाप, सुपुत्र आदि का लाभ और कुटुम्ब से सुख होता है ॥ ११ ॥

कर्म १० सप्त ७ रिपुगः ६ शुभः
स्मृतो रोगशोकमपि चार्पयेत् भृगुः ॥
कार्यनाशनमथो महापदं स्त्रीविरोध-
मपि रोगता सदा ॥ १२ ॥

और यदि शुक्र दसवें, सातवें या छठें स्थान में होय तो अशुभ होता है और रोग शोक देता है, कार्य का नाश और महाविपत्ति, स्त्री से विरोध और रोग होता है ॥ १२ ॥

अथ शनिफलम् ।

त्रि ३ षष्ठे ६ च लाभे ११ शनि-
स्सौख्यदाता ततो लाभकारी हिरण्या-

म्वारगाम् ॥ नृपान्मित्रपक्षाज्जयं चेष्ट-
लाभं करोत्यर्थलाभं सुखं संपदं च ॥ १३ ॥

तीसरे, छठें या ग्यारहवें स्थान में शनि आजाय तो सुख और सुवर्ण तथा वस्त्रों का लाभकारी होता है। एवं राजा और मित्रपक्ष से जय, इष्ट की प्राप्ति, तथा सुख और सम्पत्ति प्राप्ति होती है ॥ १३ ॥

जन्म १ चतुर्थ ४ पञ्चम ५ द्वादश-
१२ सप्ताष्ट ७,८ नवम ९ द्वितीय २
दशमे १० ऽपि ॥ स्वजनेनापि कलहं
यत्नार्थहानिमर्कजः कुरुते ॥ १४ ॥

और यदि शनैश्चर जन्म, चौथे, पांचवें, बारहवें या सातवें और आठवें, नौवें, दूसरे या दसवें स्थानों में आजाय तो स्वजनों (कुटुम्बियों) से क्लेश और यत्न तथा धन की हानि होती है ॥ १४ ॥

अथ राहुफलम् ।

उपचये ३,६,१०,११ प्रथमे १ नवमे

१ बस केतु का भी ठीक यही फल समझो ।

तमो दिशति पुत्रकलत्रधनागमम् ॥
युगग २ पञ्चम ५ रन्ध्र ८ मुनि ७
स्थितो हिबुकरि: फ४,१२ गतो मरणं
ध्रुवम् ॥ १५ ॥

तीसरे, छठें, दसवें, ग्यारहवें या पहिले और नौवें स्थान में राहु आगया हो तो पुत्र स्त्री और धन का लाभ होता है और यदि दूसरे, पांचवें, आठवें, सातवें या चौथे और बारहवें स्थान में राहु आजाय तो निश्चय मरण ही कर देता है ॥ १५ ॥

कुस्थाने खलु गच्छति रविसुते
राशौ चतुर्थाष्टमे ४, ८ व्याधि
बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च
चिन्ताधिकम् । राशौ द्वादश १२
शीर्षजन्म १ हृदये पादौ द्वितीये

शनिर्नात्यन्तं सुखदोऽस्ति दुर्जनभयं पुत्रान् पशून्पीड़कः ॥ १६ ॥

यदि शनैश्चर चौथे या आठवें स्थान में होय तो व्याधि और बन्धुओं से विरोध, परदेश का गमन, क्लेश और अधिक चिन्ता होती है, यदि बारहवीं, पहिली या दूसरी राशि में होय तो हृदय और पग में अत्यन्त क्लेश एवं दुर्जनों से अत्यन्त भय, पुत्र एवं पशुओं की पीड़ा होती है ॥ १६ ॥

हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् ॥ रामार्द्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे ४, ८ वाऽथवा ॥ १७ ॥

अथवा चौथे या आठवें राशि में स्थित शनि होय तो हानि, मरण, परदेश में गमन, एवं साधारण सुख, स्त्री और धन का विनाश करता है ॥ १७ ॥

इति गोचरफलम् ।

ग्रह के फल देने का समय ।

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ॥ अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ॥ १८ ॥

सूर्य और मङ्गल राशि के आदि में, शुक्र और बृहस्पति तथा बुध मध्य में फल देते हैं, एवं चन्द्रमा और शनि राशि के अन्त में फल देते हैं, मार्ग, अन्न, अग्निभय, शुद्धमति, वस्त्र, सुख और दुःख यह फल जन्म के मास और जन्म के नक्षत्र और रविवार आदिक वारों में होने से होता है ॥ १८ ॥

ग्रहों की भोगसंख्या ।

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासं तु मङ्गलः ॥ त्रयोदश गुरुश्चैव सपादद्वि-दिनं शशी ॥ १९ ॥

शुक्र, बुध, और सूर्य[1] एकराशि के ऊपर एक महीना और मङ्गल डेढ़ महीना बृहस्पति तेरह महीने और चन्द्रमा सवा दो दिन एक राशि पर रहता है ॥ १९ ॥

राहुरष्टादशान् मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ॥ यथा राहुस्तथा केतू राशिभोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ २० ॥

राहु अठारह महीने, शनैश्चर तीस महीने, एक राशि को भोगता है, जैसे राहु ऐसेही केतु (१८ मास) राशि को भोगता है ॥ २० ॥

---

१ बृहदवकहाड़ाचक्र में लिखा है शुक्र २७ दिन, बुध २१ दिन और सूर्य १ महीने १ राशि को भोगता है ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्रह
०१	०१	१॥	०१	१३	०१	३०	१८	१८	माह
०१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	००	००	००	००	००	दिन
०१	०१	०१	०१	०१	००	०२	०१	०१	वर्ष
०१	००	०१	०१	०१	०१	०६	०६	०६	मास
००	००	[illegible]	००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	००	दिन

अथ पादविचारः।

जन्मे १ रसे ६ रुद्र ११ सुवर्णपादं द्वि २ पञ्च ५ नन्दा ९ रजतं शुभं च॥ त्रि ३ सप्त ७ दिक् १० ताम्रपदं वदन्ति तुर्याष्ट ४ ८ मऽकाद्‌तिलोहपादम् ॥ २१ ॥

जो ग्रह जन्म, (१) छठां, (६), या ग्यारहवां (११) होय तो सुवर्णपाद जानो, पांचवां (५), या नववां (९),

होय तो रजत (चांदी) का पाद जानो, तीसरे (३), सातवें (७), या दसवें (१०) होय तो ताम्रपाद जानो । और सूर्यादिक ग्रह यदि चौथे या आठवें हो तो लोहपाद जानो ॥२१॥

व्यये १२ च शीर्षे हृदयेऽथ जन्मनि १ पादे द्वितीये २ भयरोगहानिः ॥ शनिश्चतुर्थे कलहोऽर्थहानिर्मृत्युः शनिश्चाष्टमराशिजातः ॥ २२ ॥

बारहवां ग्रह हो तो शिर में, जन्म का होय तो हृदय में, दूसरा हो तो चरण में पीड़ा होती है, एवं भय, रोग और हानि होती है, यदि शनैश्चर चौथा होय तो कलह और धन की हानि और आठवें हो तो मृत्यु होता है ॥२२॥

सूर्य का दान ।

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुम्भवस्त्रं गुडहेमताम्रम् ॥ आरक्तकं चन्दनपंकजं च वदन्ति दानं हि प्रदीप्तधाम्ने ॥ २३ ॥

माणिक्य, गेहूँ, ब्याई गौ, कुसुम्भो वस्त्र, गुड़, सुवर्ण, तांबा, लाल चन्दन, लाल फूल यह सूर्य के लिये दान कहा गया है ॥ २३ ॥

१ माणिक ।
२ गेहूँ ।
३ सवत्सा गौ ।
४ कषायवस्त्र ।
५ गुड़ ।
६ सुवर्ण ।
७ तांबा ।
८ लाल चन्दन ।
९ लाल फूल ।

रवि ॥ १ ॥

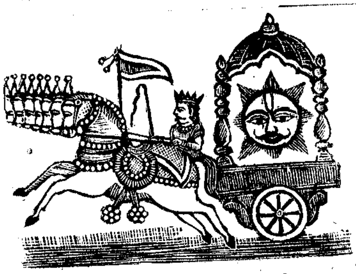

मध्यवर्तुलमण्डल अं. १२ कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवस्त्र सिंह का स्वामी जप ७०००

चन्द्रमा का दान ।

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलसुभ्रवस्त्रम् ॥ गाश्चोपयुक्ताः वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णकुम्भम् ॥ २४ ॥

सुन्दर बाँस के पात्र में, चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र,

गौ या बैल, चांदी, घृत से युक्त कुम्भ यह चन्द्रमा का दान है ॥ २४ ॥

१ वंशपात्र ।
२ चावल ।
३ कपूर ।
४ मोती ।
५ श्वेत वस्त्र ।
६ गौ या वृषभ ।
७ चांदी ।
८ कांस्यपात्र में घृत

चन्द्रमा ॥ २ ॥

आग्नेय्यां चतुरस्रमण्डल अं. ४ यमुनातीर देश
आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कस्वामी जप ११०००

भौम का दान ।

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च रक्तं वृषं चापि गुडं सुवर्णम् ॥ आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदन्ति दानम् ॥ २५ ॥

मूँगा, गेहूँ, मसूर, लाल बैल, गुड़ और सुवर्ण, लाल वस्त्र, कनेर के फूल और ताँबा यह मङ्गल का दान है ॥ २५ ॥

१ मूंगा । २ गेहूं । ३ मसूर । ४ लाल वृषभ । ५ गुड़ । ६ सुवर्ण । ७ लाल वस्त्र । ८ कनेरके फूल । ९ ताम्र ।	मङ्गल ॥ ३ ॥ दक्षिण त्रिकोण मण्डल अं. ३ अवन्तीदेशोद्भव भारद्वाज गोत्र रक्त वर्ण वृश्चिक मेष का स्वामी जप १६०००

बुध का दान ।

चैलं च नीलं कलधौतकांस्ये प्रवाल-गावौ शुभकालपुष्पम् ॥ दासी च हस्ती च सदा प्रदेयं वदन्ति दान विधुनन्दनाय ॥ २६ ॥

नील वस्त्र, सुवर्ण या चांदी, कांस्यपात्र, मूंगा, गौ, पुष्प, दासी और हाथी यह बुध का दान कहा गया है ॥ २६ ॥

बुध ॥ ४ ॥

१ नील वस्त्र ।
२ सुवर्ण या चाँदी ।
३ कांस्य ।
४ मूंगा ।
५ गौ ।
६ फूल ।
७ दासी ।
८ हस्ती ।

ईशान बाणाकारमण्डल. अं. ४ मगध देश आत्रेय सगोत्र पीतवर्ण कन्या मिथुन का स्वामी जप ६०००

बृहस्पति का दान ।

शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीत धान्यमपि पीतमम्बरम् ॥ पुष्परागलवणादिकाञ्चनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ २७ ॥

चीनी, हल्दी, अश्व, पीला धान्य, पीला वस्त्र, पुष्पराग (पुखराज), लवण (नोन-साम्हर) और काञ्चन यह बृहस्पति का दान है ॥ २७ ॥

१ शक्करा। २ हल्दी। ३ अश्व। ४ पीत धान्य। ५ पीत वस्त्र। ६ पुष्पराग। (पुखराज) ७ लवण। ८ काञ्चन।	**गुरु ॥ ५ ॥** उत्तर दीर्घचतुरस्रमण्डल अंगुल ६ सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पी० व० धनु मीन का स्वामी जप १६०००

शुक्र का दान।

चित्राम्बरं सुभ्रतरं तुरङ्गं धेनुं सवत्सां रजतं सुवर्णम्॥ सतण्डुलं चैव सुगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय॥ २८॥

चित्र वस्त्र, श्वेत अश्व, सवत्सा गौ, चाँदी, सुवर्ण, चावल और सुगन्धि द्रव्य यह शुक्र का दान है॥ २८॥

शुक्र ॥ ६ ॥

१ चित्राम्बर ।
२ श्वेत अश्व ।
३ सवत्सा गौ ।
४ चाँदी ।
५ सुवर्ण ।
६ चावल ।
७ सुगन्धि पदार्थ ।

पूर्व त्रिकोणमण्डल अं. ६ वृष तुला का स्वामी, भोजकट देश, भार्गव सगोत्र श्वेत वर्ण, जप १६०००

शनैश्चर का दान ।

माषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलं कुलत्थीं महिषीं च लोहम् ॥ सद-क्षिणां वस्त्रयुतं वदन्ति सभक्तिदानं रविनन्दनाय ॥ २९ ॥

उड़द, तेल, इन्द्रनील (नीलम), तिल, कुलथी, भैंस, लोहे की कील, दक्षिणा और श्याम वस्त्र यह शनि का दान है ॥ २९ ॥

शनि ॥ ७ ॥

१ माष (उड़द)
२ तैल ।
३ इन्द्रनील (नीलम)
४ तिल ।
५ कुलथी ।
६ महिषी (भैंस)
७ लोह ।
८ दक्षिणा ।
९ श्याम वस्त्र ।

पश्चिम धनुषाकार मण्डल, अंगुल २ सौराष्ट्र देश, कश्यपगोत्र मकर कुम्भ का स्वामी कृ. व. जप २३०००

राहु का दान ।

गोधूमरत्नं च तुरङ्गमं च सुनील-
चैलानि च कम्बलं च ॥ तिलं च तैलं
खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दान-
मिदं वदन्ति ॥ ३० ॥

गेहूँ, रत्न, अश्व, नीला वस्त्र, कम्बल, तिल, तेल, लोहा और अभ्रक यह राहु का दान है ॥ ३० ॥

१ गेहूं ।
२ रत्न ।
३ अश्व ।
४ नील वस्त्र ।
५ कम्बल ।
६ तिल ।
७ तेल ।
८ लोह ।
९ अभ्रक ।

राहु ॥ ८ ॥

नैऋत्य, शूर्पाकारमण्डल अङ्गुल १२ राठिनदेश
पैठीनस गोत्र, कृष्णवर्ण, जप १८०००

केतु का दान ।

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलं चासितपुष्पकं च ॥ वस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः ॥ ३१ ॥

* इति ग्रहदानानि *

वैडूर्यमणि, तिल, तेल, कम्बल, काले फूल, काला वस्त्र और कस्तूरी यह केतु का दान है ॥ ३१ ॥

	केतु ॥ १ ॥
१ वैडूर्यमणि । २ तिल । ३ तेल । ४ कम्बल । ५ काले फूल । ६ काला वस्त्र । ७ कस्तूरी ।	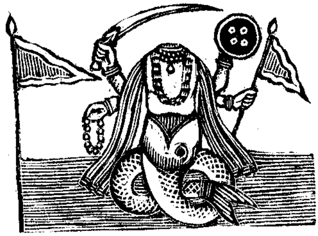
	वायव्य ध्वजाकारमण्डल, केतु अङ्गुल ६ अवन्ति देश, जैमिनीयगोत्र, धूम्रवर्ण, जप १७०००.

इति ग्रहदानं समाप्तम् ।

रविनख २० दिनमानं चन्द्रमा-
व्योमबाणो ५० क्षितितनयगजाश्वि-
२८ श्चन्द्रजः षट्शरेषुः ५६ ॥ शनि-
रसगुणा ३६ सख्या वाक्पतिर्नागबाणौ-
५८ र्नयनयुग ४२ ल राहुः शून्य-
सप्ते ७० च शुक्रः ॥ ३२ ॥

सूर्य की दशा २० दिन, चन्द्रमा की दशा ५० दिन, मङ्गल की दशा २८ दिन, बुध की दशा ५६ दिन, बृह-

स्पति की दशा ५८ दिन, शुक्र की दशा ७० दिन, शनि की दशा ३६ दिन, राहु की दशा ४२ दिन रहती है ॥ ३२ ॥

उक्त दशाओं का फल ।

सूर्यो वित्तविनाशनं प्रकुरुते धर्मार्थलाभौ शशी । भौमः शस्त्रविघातरोगमरणं सोमात्मजः सम्पदम् । मन्दो मन्दगतिर्गुरुश्च विभवं राहुस्तथा बन्धनं सर्वाभीष्टफलप्रदो निगदितः शुक्रो दशासंस्थितः ॥ ३३ ॥

सूर्य की दशा में धन का सत्यानाश, चन्द्रमा की दशा में धर्म और अर्थ का लाभ, मङ्गल की दशा में शस्त्र का आघात, रोग और मरण, बुध की दशा में सम्पत्ति का लाभ, शनैश्चर की दशा में मन्दगति (रोगादिक), बृहस्पति की दशा में विभवलाभ, राहु और केतु की दशा में बन्धन, एवं शुक्र की दशा में समस्त कामनाओं की सिद्धि होती है ॥ ३३ ॥

इति गोचरग्रहफलं समाप्तम् ।

अथ नष्टवस्तुपरिज्ञानम् ।

प्रश्नभावः ।

मेषे वृषे दिशेत्पूर्वमाग्नेय्यां मिथुने तथा ॥ दक्षिणे कर्कटे ज्ञेयो नैर्ऋत्यां सिंह ईक्षते ॥ ३४ ॥

मेष या वृष में वस्तु गई हो तो पूर्वदिशा में तथा मिथुन में गई हो तो अग्निकोण में, कर्कलग्न में गई हो तो दक्षिण में, सिंह में गई हो तो नैर्ऋत्य कोण में ॥३४॥

कन्यायां पश्चिमे ज्ञेयः प्रतीच्यां तुलवृश्चिके ॥ धने चैव तु वायव्यामुत्तरे मकरे घटे ॥ मीने ईशानतो ज्ञेयस्तस्करो दिशि लक्षणम् ॥ ३५ ॥

कन्या में गई हो तो पश्चिम में, तुला और वृश्चिक में गई हो तो पूर्वदिशा में, धन में गई हो तो वायुकोण में, मकर और कुम्भ में गई हो तो उत्तर में और मीन में गई हो तो ईशान कोण में वस्तु गई जानो ॥ ३५ ॥

मेषे च ब्राह्मणश्चौरो कन्यायां च कुलाङ्गना ॥ पुत्रो वा यदि वा भ्राता तुलायां तस्करो भवेत् ॥ ३६ ॥

मेष लग्न में ब्राह्मण चोर, कन्या में कुलाङ्गना (कुलीन स्त्री), तुला में पुत्र या भाई चोर हो ॥ ३६ ॥

वृश्चिके म्लेच्छचौरः स्याद्भार्या ज्ञेया धनेन च ॥ मकरे वैश्यचोरः स्यात्कुम्भे स्यान्मूषकस्तथा ॥ मोने भूमिगतं प्रोक्तं नान्यथा तस्करो भवेत् ॥ ३७ ॥

वृश्चिक में म्लेच्छ, धन में स्त्री, मकर में वैश्य, कुम्भ में मुसा (चूहा), चोर समझना चाहिए, एवं मीन में गई वस्तु पृथिवी में जानो ॥ ३७ ॥

नष्ट वस्तु की दिशा और चोर जानने का चक्र ।

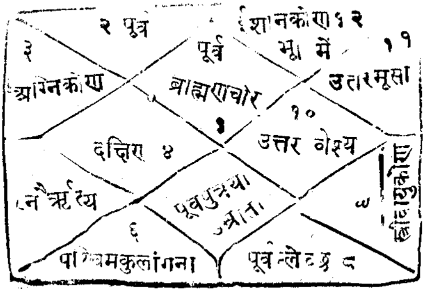

उच्चनीचग्रहबोधक चक्र ।

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह	
००	०१	०६	०५	०३	११	०६	३०	०८	राशि	उच्च
१०	०३	२८	१५	०५	२७	२०	००	००	अंश	उच्च
०६	०७	०३	१	०९	०५	००	०८	०३	राशि	नीच
१०	०२	२८	१५	०५	२७	२०	००	००	अंश	नीच

इति प्रश्नभावः समाप्तः ।

अथ लग्नवाराहा ।

इस समय संसार में विशेष परिपाटी इस बात की पाई जाती है कि जिस समय बालक का जन्म होता है, उस समय पण्डित से पूछते हैं कि सूतिका स्थान में कितनी स्त्रियाँ थी ? दीपक किधर था ? इत्यादि २, यही विचार कर हमने अत्यन्त परिश्रम से यह लग्न वाराही प्राप्त करके पाठकों की भेंट करी है ।

मेष १ वृष २ सिंह ३ और मकर ४ ये लग्न शब्द-वाचिनी मानी गई हैं तुला १ कुम्भ २ और कन्या ३ यह लग्न अर्धशब्दकारिणी कहलाती हैं । शेष समस्त लग्न शब्दरहित मानी गई हैं ॥ १ ॥

सामान्य नियम—मीन (१२) और मेष (१) लग्न में दो स्त्रियां, वृष (२) और कुम्भ (११) लग्न में चार स्त्रियां, तुला (७) और कन्या (६) लग्न में सात स्त्रियां, धन (९) और कर्क में (४) पाँच स्त्रियाँ, एवं अन्य समस्त लग्नों में तीन स्त्रियाँ सूतिका-गृह में विधान की गई हैं ॥ २ ॥

विशिष्ट वर्णन—मिथुन ३ लग्न में-दाई नीच, बालक ने अर्द्ध शब्द किया, नाल छुटा आया, जन्म समय में ६ स्त्रियाँ थी, पिता का घर होना नहीं पाया जाता, बालक जननेहारी के सन्मुख दीपक था ॥ ३ ॥

कर्क लग्न—शिर उत्तर को, दाई उत्तम, पिता घर पर, उत्पन्न होते ही बालक रोया, नाल छुटा आया, उत्पन्न होते ही बालक ने छींका, स्त्रियाँ चार, एक पीछे से आई, दीपक द्वारवाला, बांई ओर बालक के अङ्ग में लहसन होगा, खाट के सिरहाने की ओर का पाया फटा, माता को कष्ट हुआ ॥ ४ ॥

सिंह लग्न—शिर पूर्व को, बालक जन्म लेते ही रोदन करने लगा, पिता घर, स्त्रियाँ तीन, एक पीछे से आई, दो बार दीपक बाला गया, पांव की ओर का पाया फटा था ॥ ५ ॥

कन्या लग्न—शिर पश्चिम को, पिता घर ही, नाल छुटा आया, बालक ने अर्ध शब्द किया, सात स्त्रियां, दो के वस्त्र मलीन, पीली वस्तु खाई, दीपक सन्मुख वाला, दाई नीच ॥ ६ ॥

तुला लग्न—शिर पछाँह को, जन्म लेते ही बालक रोया, पिता घर नहीं, नाल छुटा आया, दाई के वस्त्र मलीन, श्वेत वस्तु भक्षण करी, स्त्रियां ३, एक पीछे से आई, दीपक पच्छिम, खाट का पाया फटा, माता ने कष्ट पाया, बालक भूमिपर आते ही बिल बिलाया ॥ ७ ॥

वृश्चिक लग्न—उत्तरको शिर, दाई नीच, पिता घर, नाल लिपटा आया, स्त्रियाँ छः, एक गर्भवती पीछे

से आई, जन्म लेते ही बालक ने छींका, रक्त (लाल) वस्तु भक्षण करी, माता ने जनने के समय कष्ट पाया, पिता को भी कष्ट हुआ ॥ ८ ॥

धनु लग्न—पूर्व को शिर, पिता घर, दाई उत्तम, ३ स्त्रियाँ, एक गर्भवती, खाट का पाया फटा, बालक बुद्धिमान होगा, पिता को कुछ लाभ हो, पीली वस्तु खाई, एक नीच दाई पीछे से आई ॥ ९ ॥

मकर लग्न—शिर दक्षिण को, पिता बाहर, जन्मत ही बालक ने छींका, नाल छुटा आया, दाई नीच, दो स्त्रियाँ, एक पीछे से आई, श्याम वस्तु का भोजन किया ॥ १० ॥

कुम्भ लग्न—शिर पश्चिम को, पिता और माताने कष्ट पाया, दाई दो, पहिली नीच, जन्मते ही बालक रोया, बांई ओर बालक के लहसन, चार स्त्रियां, एक पीछे आई, एक गर्भवती, खाट का पाया फटा ॥ २१ ॥

मीन लग्न—शिर उत्तर को, दाई उत्तम, स्त्रियाँ विषम, वस्त्र उत्तम, श्वेत वस्तु खाई ॥ २१ ॥

इति ग्रहगोचरज्योतिष भाषानुवादसहित

* समाप्तम् *

बाबू कैलासनाथ भार्गवद्वारा भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित ।

बालबोध-ज्यौतिषम्

अर्थात्

फलितनवरत्नसंग्रहः

ज्यौतिषाचार्य श्री पं० विन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदिना संगृहीतः ।

इस छोटे से संग्रह में १ संज्ञारत्न, २ मुहूर्तरत्न, ३ संक्रान्ति रत्न, ४ संस्काररत्न, ५ विवाहरत्न, ६ यात्रारत्न, ७ जातक रत्न, ८ ताजिकरत्न, ९ प्रकीर्णरत्न नाम के नव प्रकरण हैं। इन रत्नों में नाम सदृश ही विषय भी दिये गये हैं। आज कल वधूप्रवेश द्विरागमन पर कुछ मतभेद हो गया है। उसका शास्त्रोंके प्रमाणसहित पूर्ण विवेचन ऐसो सरल और प्रासादिक हिन्दीभाषा में किया गया है कि थोड़ा पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इसको बहुत अच्छी तरह पढ़ और समझकर उससे अतुल लाभ उठा सकता है। इस वधूप्रवेश द्विरागमन विवेचनको एकबार पढ़ लेने से फिर इस विषय में किसी प्रकार का भी सन्देह नहीं हो सकता। ऐसा विशद विवेचन इस विषय में आज तक कोई भी नहीं निकला है। जातक प्रकरण में कुण्डली बनाने और लिखने की रीति, तथा ताजिक प्रकरण में वर्षफल बनाने की कुल रीतियाँ बड़ी सुगमता से लिखी गई हैं। कि बहुधा इस एकही पुस्तक को पास रखने से मनुष्य सम्पूर्ण व्यावहारिक विषयों का पूरा जानकार हो सकता है। इसको एक प्रति प्रत्येक सनातन धार्मिक जनताको अपने २ पास अवश्य रखना चाहिये। इतना उपयोगी रहने पर भी ग्राहकों की सुविधा के लिये मूल्य केवल ।।।) रक्खा गया है।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी।

७५६—३५